Title:- Baragma[illegible]

outhor shamboo Nath.

N. K. P.
Lucknow
1874.

दैवज्ञाभरण

पण्डित त्रिवेणी दत्तात्मज शम्भु नाथ
कृत
जिस में
सम्पूर्ण जातक भेद फल युक्त सुन्दर
छन्दों में अति स्पष्ट रीति से
रचित है
इस नवीन ग्रन्थके अभ्यास करने
वाले सुगमता से तीनों काल का फल
प्रगट कर सकेंगे

इस पुस्तक को पण्डित प्यारे लाल और
पण्डित महेश दत्त निज यन्त्रालय के
विद्वानों ने यथोचित शुद्ध किया

स्थान लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के यन्त्रालय में मुद्रित हुआ
अगस्त
सन् १८७४ ई.

श्रीगणेशायनमः

श्लोक

शिवसुतं सततं त्रिदशस्तुतं गजमुखं विबुधव्रज१
बुद्धिदम्॥गिरिसुताकरसारसलालितं गणपतिं१
मदयं सदयं भजे॥१॥दोहा॥श्रीश्यामा शङ्कर चरण
वन्दौ मंगलकारि॥सर्वसिद्धि विधिबुद्धि प्रद भूमि
देव भयहारि॥२॥श्रीदैवज्ञाभरण यह विरचौ ग्रं-
थ नवीन॥जाहि सुने जोतिषी मन हरषित होइ प्र-
वीन॥३॥श्री गणेश शुक देव मत जो भाषेहु जग
माहि॥शंभुनाथ शिशु बोध हित भाषा विरचत
ताहि॥४॥लग्न मूर्ति तनु उदय वपु१ प्रथम भाव२
को नाम॥कोश अर्थ धन दूसरो गेह जानु मति धा-
म॥५॥भ्राता सहज सहोदरो यह तृतीय गृह जा-
नु॥अम्बा तूर्य्य तुरीय सुख४ जान चतुर्थ बखानु॥
६॥विद्या वाचा पुत्र सुत५ जानो पंचम भाव॥वैरि
शत्रु रिपु द्वेष्य क्षत६ षष्ठ भवन को नाव॥७॥द्यून
मदन मद कामिनी७ जानिय सप्तम गेह॥रंध्र छि-
द्र मृति निधन लय८ अष्टम गृह मुनि लेह॥८॥
धर्म भाग्य शुभ९ नवम गृह दशम राज्य नभक-
र्म१०॥लाभ एकादश जानिये रिष्फ१२ द्वादशोम-
र्म॥९॥चौपाई॥लग्न चतुर्थ सप्तदश धामा॥कं-
टक केन्द्र चतुष्टय १०।७।४।१।नामा॥पञ्चम नव-
म त्रिकोण कहावै॥दुःख रिपु६ अष्टम८ व्यय१२ ॥
त्रिक गावै॥पञ्चम अष्टम लाभ द्वितीया॥पणफ-

ण संज्ञक गुन गण लीया ॥ द्वादश षष्ट भवन अरु
भ्राता ॥ आपोक्लिम संज्ञक विख्याता ॥ दशम ततृी
य लखे एक चरणा ॥ नव पञ्चम द्वि चरण ते वरणा
चतुरष्टम त्रिचरण ग्रह देखे ॥ सप्तम पूरण दृष्टि
निरेखे ॥ मेष वृषभ मृग कन्या वासी ॥ कर्क मीन तु
ल थिर ग्रह रासी ॥ सूर्य्यादिक ग्रह उच्च दखानो ॥
उच्च ते सप्तम नीच हु मानो ॥ कुज भार्गव बुध चं
द्र दिनेशा ॥ बुध कवि मंगल गुरु अमरेशा ॥ शौरि
मंद अंगिरा कुमारा ॥ जस्तु ते राशि नाथ निरधारा ॥
ससि सुत बाल तरुण अंगारा ॥ शुक्र चन्द्र मध्यम प-
य धारा ॥ गुरु रवि शनि स्थविर बखाना ॥ देहि जन
हि फल वयस समाना ॥ अरुण वरण मंगल तम
जेता ॥ सौम्य हरित कवि ससि तन शेता ॥ वाक्पति
पीत शनै श्चर नीला ॥ राहु केतु शनि वर्ण सभीला
अज वृष वृश्चिक हरि वन वासी ॥ तुला मिथुन क-
न्या धनु रासी ॥ है जन चर जल चर पर वीना ॥ म-
कर कुंभ औ कर्कट मीना ॥ चर थिर औ द्वैत स्व
भावा ॥ मेषादिक राशि द्वि तुध गावा ॥ बन चर जन
चर जल चर आदी ॥ राशि स्वभाव कहै श्रुति वादी
दोहा ॥ नंदा भद्रा औ जया रिक्ता पूर्णा नाम ॥ प्रति
पदादि तिथि नाम हि ते भाखहि मति अभिराम
१० ॥ छन्द कूलन ॥ सूर्य्य को मित्र ससि देव गुरु मंग
लौ सौम्य सम शुक्र शनि शत्रु ताके ॥ चंद्र को सू-
र्य्य बुध मित्र सम अन्य ग्रह मित्र ससि सूर्य्य गुरु
भौम ताके ॥ शत्रु शनि शुक्र सम सौम्य बुध के सु

हद भौम गुरु मंद शम शत्रु चंदा॥देव गुरुके सुह
द भौम रवि चंद्रमा शत्रु बुध शुक्र सम भाव मं
दा॥शत्रुवो मित्र बुध मंद सम भौम गुरु चंद रवि
शत्रु अथ मंद केरो॥मित्र बुध भार्गवौ शत्रु रवि
चंद कुज देवता गुरु समो विज्ञ टेरो॥आपने गे
ह संपूर्ण वल लेखो मित्र गृह अर्द्ध वल वान्न र
भोगा॥शत्रु गृह मेष वर एक चरण प्रवल अ
स्त गत खेट नहिं वीर्य्य जोगा॥१४॥दोहा॥श्रीगुरु
राम दयाल प्रभु चरणसरो रुह ध्याइ॥शंभु नाथ
यह ग्रंथ मो रचि संज्ञा अध्याइ॥१५॥इति श्रीम
द्धारा थल थलथ्यवर्ण वर्णी प्रकाशिड य शाष्पा
राड मर्हिडत परिडत त्रिवणी दत्तात्मज शम्भु नाथ
कृते दै वज्ञा भरणे संज्ञा ध्यायः॥दोहा॥देव दे
त्त गुरु चरण युग अव वन्दौ कर जोर॥जेहि
का मानेउ प्रान प्रिय सुत गिरि राज किशोर॥१६
प्रथ मांह भाषौं भाव फल जेहि विधि कहेउ गणे-
श॥जेहि लखि भाषैं जोतिषी जन सुख दुष उपदे-
श॥१७॥सौम्य स्वामि युत दृष्ट जो भाव वृद्धि कहु ता
सु॥पाप विलोकित पाप युत भाव दुषित परका-
स॥१॥तनु पति खल युत त्रिक भवन तन सुख
मिलै न तेहि॥त्रिक ६।८।१२॥पति जो तन गृह र-
है आधि व्याधि तेहि देहि॥२॥क्रूर रहै जो लग्न
मे वीर्य्य हीन लग्नेश॥रोग वढै तेहि देह निति
चिन्ता जनित कलेश॥३॥बुध गुरु कवि युत ल-
ग्न पति लग्न रहै वा केन्द्र॥प्रवल सर्व सुख सं-

पदा सुनि यन होयन नैन्दु ॥६॥ लग्न नाथ खल खगं
भवन लग्न सुथिर जो पाप ॥ मनुज होइ दृग अं-
धसो क्षीण काय जुत ताप ॥७॥ चन्द्र सूर्य जेहि
के रहै निर्बल पाप मझार ॥ व्यभिचारी तन क्षीन
सो पर घर लहै अहार ॥८॥ चौपाई ॥ पाप रहै जो
लग्न अगारा ॥ होइ लग्न जो पाप मझारा ॥ रहै ल-
ग्न ते सप्तम पापा ॥ तेहि तन देहि नितै परितापा
रवि ससि ते सप्तम ग्रह वासी ॥ होइ भौम पृष्ठोदय
राशी ॥ पर ग्रह रत दृग हत लघु देही ॥ मनुज हो-
इ अघ वाम सनेही ॥ धना धीस वागीश समेता ॥
रहै स्वग्रह वा केन्द्र निकेता ॥ संपति राशि मनुज सो
पावै ॥ धन २ पति त्रिक दौस १२ ॥ग धनहि नशा-
वै ॥ त्रिक ग्रह में द्वादश धन २ नाथा ॥ रहै लग्न प-
ति भार्गव साथा ॥ ते जन होइ नेत्र ते हीना ॥ सुखसं
पति सो क्षीन मलीना ॥ रहै बन्धु धन २ ग्रह युत पा-
पा ॥ शत्रु सहित दृग लोचन तापा ॥ होहि भानुका
विवि त्रिक ग्रह माही ॥ रात्रि अंध ताड्ष वाहु ताही ॥
सूर्य शुक्र तनु पति त्रिक भावे ॥ तेहि जन्मांध जो
तिषी गावे ॥ पूर्ण जोग पूरण फल दाता ॥ खण्डि-
त योग खण्ड फल ख्याता ॥ रवि शसि द्वादश ध-
न गृह यासा ॥ नयन युग्म कर वारे विधाता ॥ तहं
थिर दाहिन दृग हर मंदा ॥ भौम वाम लोचन दुख
कंदा मज्ज ननि ४ जनक १० सुत ५ त्रिय ग्रह ना-
थ ॥ त्रिक गस्त ६।८।१२ ॥ बुसे शुक्र ससि साथा ॥
नयनद: ॥द भ ॥६ बुधनाके ॥ नायक रहै भावकों

ताको॥ दोहा॥ सहज भाव पति भवनयुतत्रिकगृह कौ रे निवास॥ बंधुहीन तेहि जानिये जोतिष शास्त्र विलास॥ सहज भाव पति निज भवन केन्द्र रहै शुभ दृष्ट॥ बंधु सौख्य तेहि देहि वहु मेटै सकल अरिष्ट॥ ३॥ सुख स्वामी निज भवन में सौम्य भाग्य पति संग॥ महा राज्य सुख तेहि मिलै वाहन तुरग मतंग॥ ३॥ सुर गुरु संयुत दृष्ट वा लग्न रहै सुखेश॥ उच्च राशि में मनुज सो निश्चै होइ नरेश॥ ४॥ सुखाधीश जो लाभ गृह सौम्य दृष्ट वलवान॥ गज वाजी राजी सहित सुखी रहै धनवान॥ ५॥ तनु पति संयुत हिवुक ४ पति होइ आपने धाम॥ तेहि वसुधा भव भवन सुख मिलै सपूरण काम॥ ६॥ सुखपति जो त्रिक गृह वसै क्षिति सुख मिलैन ताहि॥ वाहन सुख औ मित्र सुख बंधु सौख्य तेहि नाहि॥ ७॥ सौख्य भवन पति दशम पति जन्मे खल को संग॥ रहे त्रिक स्थित खल प्रमित करै अगिन गृह भंग॥ ८॥ चौपाई॥ विद्या पति बुध गुरु के संगा॥ त्रिक गत कर विद्या गुण भंगा॥ निज गृह रहे नवम वा केन्द्रा॥ जनसो होइ धनाढ्य बुधेन्द्रा॥ सुत पति वाल वृद्ध वल हीना॥ रहै जाहि के सो मति छीना॥ सुत पति बुध गुरु युत वलवंता॥ जनसो होइ विदित मति मंता॥ पंचम पति त्रिक मो ६।८।१२ गुरु संगा॥ वाच विहीन करै मति भंगा॥ पित्रादिक गृह पति त्रिक गामी॥ बुध गुरु सुत कारक सठ नामी॥ गुरु ते सुत पति त्रिक गृह वासी॥ पुत्र सौख्यन-

सरके प्रकाशी॥शुभ युत धर्म पुत्र प्रतनु १ नायक॥कछु विलम्ब पर पुत्र प्रदायक॥कार्क राशि सुत गृह में चंदा॥कन्या संतति देहि अनंदा॥पंचम भवन रहे जो क्रूरा॥देव राज गुरु संगति पूरा॥संतति सुख सो जन नहिं पावै॥श्री शुकदेव व्यास सुत गावै॥सूर्यतनय सुत गृह निज गेहा॥एक तनय सुख लहै सनेहा॥कुंभे शनि सुत पंचक दाता॥मृत गत सुत कन्या त्रय धाता॥कन्या तीनि देहि अंगारा॥देहि जाहि को तनय अगारा॥दोहा॥गुरु केवल सुत पंच प्रद कार्क रासि सुत भाव॥राहु केतु वृष कार्क भव लघु वय सुत सुख गाव॥८॥सुर गुरु जाके सुख भवन खेचर पाप समेत॥तीस वर्ष पर ताहि को संतति सो सुख देत॥१०॥पंचम वा अष्टम दशम बल युत जेहि के चंद॥तीस वरिष पर मनुज सो पावै पुत्र अनंद॥११॥यावत पाप ग्रह सहित सुत गृह शुभ ग्रह दृष्ट॥तावत वर्ष प्रमाण लै कहिए वंस अरिष्ट॥१२॥जो अरिष्ट बुध कवि भनी करे शंभु अभिषेक शंभु नाथ कहि शिव कृपा पावै तनय अनेक॥१३॥सुर गुरु रहे अरिष्ट जो सो वंसेश्वर मंत्र॥जपै अपेपश्री यंत्र सो सुत सुख लहै स्वतंत्र॥१४॥राहु केतु शनि भौम रवि जेहि के वंस अगार॥वंसेश्वर शिव पूजि सो सुख लहै उदार॥१५॥चौपाई॥तनु अष्टम खल पुत षष्टेशा॥देहि मनुज तन व्रण क्लेशा॥यही भांति जनकादिक भावा॥यहि विधि बुध तेहि तन व्रण गावा॥शिरयुत दिनकर सुख व्रण चंदा॥ग्रास मंग

دیوکیا بہرن

लै हृदि वुध वृन कंदा॥राहु नाभी को विलोचन पृष्ठा
वदन अधर पानि वृन्द अनिष्टा॥ तनु पति संग रा
हु वा केतू॥सुथिर रहै वुध भौम निकेतू॥वुध औ
भौम विलोकै ताही॥ताके रोग होइ दृग माही॥शि
शि पति वसै लग्न वल वंता॥होइ मनुज सो शत्रु
निहंता॥धन गृह परै षष्ठ पति जाके॥सुत सो मि
लै वित्त वहु ताके॥धन गृहै रहै सहज भवनेशा
हरै नाम सुख होइ धनेशा॥लग्ना ष्टम पति अरि
गृह वासी॥नाभी माहि रोग परि भासी॥भृगु ल
ग्नेश षष्ठ गृह गंता॥दक्षिण लोचन को परि हंता
तनु पति शनि अरपु ६ मंदिर गामी॥चरण रोग को का
रै वे रामी॥राहु शत्रु गृह युत लग्नेशा॥ अधर दंत
मो करै कलेशा॥केतु लग्न पति कुज वुध भवना॥
शत्रु दृष्ट कर गुद रुज पवना॥मंगल वुध रहै शत्रु
निकेता॥तनु पति व्रण सीर रुज देता॥वल युत
शत्रु भवन मे चंदा॥करै शीत कफ ते तनु मंदा॥दो
हा॥क्षीण चंद्रमा तनु भवन केंद्र विराजे क्रूर॥शु
भ षेचर नहिं लखै तेहि रोगी होइ जरूर॥वुध गुरु
भौमन देखही रहै शुक्र गृह पाप॥चंद्र सहित तेहि
अंग मो होइ रोग परि ताप॥१७॥रिपु ६ गृह पति
निज लग्न मो लखै न सौम्यन भोग॥शत्रु वाद ते ता
हि तन वाढै चिंता रोग॥१८॥अरि गृह पति व्यय १२
गृह वसै राहु सूर्य्य वा संग॥पर गृह वसि भोजन
करै नीच वृत्ति धन भंग॥१९॥जतनो गृह धन व
मद ७ भवन रहै तासु पति दृष्ट॥तै विवाह तेहि

دیوگیا بہرن

का वाहै खल गृह करै अरिष्ट॥२०॥धन २ कलत्र पति त्रिक भवन जेते खल के संग॥जोतिर्विद ताके कहैं तेती कामिनि भंग॥२१॥षष्ट भाव मंगल रहै सप्तम ग्रह में राहु॥अष्टम ग्रह में शनि रहै करै त्रिया तनु दाहु॥२२॥लग्ना षष्ठ सप्तम सुखे ४ व्यय ग्रह रे भूमि कुमार॥कामिनि हंता पुरुष सो पुरुष पहि या तै हार॥२३॥चौपाई॥कामिनि धाम परै जो राहू॥पाप जुगम देखै तेहि काहू॥यह विलम्ब पर व्याहुति तासू॥पुनि ता कारि त्रिय लहै विनासू॥रहै दिवाकर जेहि के देहा॥परै सनिश्चर सप्तम गेहा॥तासु १ त्रिया नहि होइ सुगर्भा॥चिंता बढै चित्त विनु अर्भा॥सप्तम भौन रहै रवि मंदा॥जीव अवीक्षित नभ १० ग्रह चंदा॥तासु त्रिया गुर्विणि नहि होई॥शंभु नाथ यह निगम निचोई॥रिपु ६ सुत ५ मंदिर जलचर रासी॥शनि वर मंगल गर्भ विनासी॥उदै राशि हो राशि नि मंदा॥बाला हीन रिपु ग्रह गत चंदा॥लखै ताहि कह बुध हितकारी॥गर्भिणि हो इन बाल की नारी॥अष्टमे ग्रह कवि बुध वागीशा॥जो स्थिर राशि वसै सम तीशा॥सब प्रकार सो पावै कष्टा॥नीच कर्म कारक मति नष्टा॥निधन नाथ जाके ग्रह लाभा॥वाल्य वयस दुख पुनि सुख आभा॥पाप सहित अल्पायु प्रदाता॥सौम्य सहित दीर्घायु विख्याता॥निधन नाथ त्रिक ग्रह खल संगा॥तनु १ पति युत कर आयुष भंगा॥रवि सुत अष्टम आयुष दाता॥रहै केंद्र ग्रह सो च प्रहर्ता॥रहै निधन पति कोश अगारा

करै मनुज सो तस्कर कारा ॥ तेहि के शत्रु होइ अधिका
रा ॥ पर दारा संग करै विहारा ॥ दोहा ॥ अष्टम तनु पति
जाहि के रहै शत्रु द्युति धाम ॥ हीन वीर्य्य जन दीन सो
जय न लहै संग्राम ॥ २४ ॥ अष्टम पति ओ लग्न पति
क्षिति रिपु मंदिर माहि ॥ वीर्य्य वंत जो होइ नर देहि
कीर्ति जय ताहि ॥ २५ ॥ सुख पति जाके लग्न में संगे
बल युत चंद ॥ वाहन मत्त मतंग सो पावै मनुज अ
नंद ॥ २६ ॥ शुक्र सहित सुख पति वपुष १ पीनस वा
हन देहि ॥ गुरु जुत बाजी राजि दै राजी राखै तेहि २७
भाग्य नाथ तनु १ में रहै सुख गुरु निरखै ताहि ॥ शं
भु नाथ काहि होइ सो राज्य पूज्य जग मांहि ॥ २८ ॥
भाग्य नाथ सुख ४ पति सहित रहै लग्न निज गे
ह ॥ नरै मिलै तेहि सर्व सुख संपति सहित सने
ह ॥ २९ ॥ भाग्य नाथ सुख ४ भवन पति जेहि के अ
ष्टम भाव ॥ भाग्य रहित जन होइ सो जगमें लहै अ
भाव ॥ ३० ॥ रहै धर्म ९ पति लाभ ११ गृह लहै मनु
ज नृप मान ॥ धर्मवान सुख शील युत होइ बहुत र
धन वान ॥ ३१ ॥ धन २ पति तनु पति यान ४ पति जा
के रहै स्वगेह ॥ वसै धर्म पति लग्न में लक्ष्मी करै सने
ह ॥ ३२ ॥ छन्द तोटक ॥ जेहि के गुरु भार्गव केन्द्र महै
सुख नायक युक्त त्रिकोण रहै ॥ निज मंदिर संस्थित
भाग्य पती ॥ सोइ होइ महा धनसत्र पती ॥ जिनके
धरणी सुत कर्म १० परै ॥ कृषि कर्म करै धन धान्य
धरै ॥ सुर पूज्य रहै नभ १० मंदिर में ॥ गज वाजि सचिं
तय यदि रमै ॥ दोहा ॥ अष्टम पति तनु कर्म ११ पति

ولوگیا بهرن

को ९ पूर्ण लाभ गत केन्द्र॥ मनुज होइ दीर्घायु सो संपति
सहित नरेन्द्र॥३३॥ ग्रह पंचक पण फर॥ ५।८।११।२
हिबुक सहज भवन में होइ॥ मध्य आयु तेहि बालको
कहै गणक सब कोइ॥३४॥ आपोक्लिम ग्रह में बसें
पंच खेट बल हीन॥ हीना युर्बल होइ सो धनसे रहै
मलीन॥३५॥ लग्न नाथ शनि गण १० नपति जाके अ
ष्टम भाव॥ मनुज होइ हीनायु सो रोगी चपल सुभा
व॥३६॥ तनु १ निधन ८ ख्वर भौम युत जोके रिपु ६
मृति गेह॥ अष्ट मेश के दशा महं लखै घाव तेहि देह
३७॥ राहु केतु दिवाकर मृति ८ पति तनु १ पति सं
ग॥ रहै षष्ट अष्टम भवन कहै देह व्रण भंग॥३८॥ वाह
न ४ पति अष्टम भवन जेहि के होइ सपाप॥ वाहन तें
वा चोर तें मरण लहै युत ताप॥३९॥ छंद हरिगीति
का॥ सुखनाथ भाग्य गृहे रहै तेहि छत्र चामर चिंत
तना॥ थिर राज्य धाम नृपाल भूषण वाजि गज चि
त्तइ मना॥ सोइ लाभ गृह बहु लाभ दायक द्वादशे
अघ को करै॥ द्विज शम्भु नाथ गणेश भाषेउ शंभु स
म दुख को हरै॥४०॥ व्यय नाथ जेहि के लग्न द्विजग
ह वाच माधुरि भाषई॥ रुचि मान औ धन वान मा
नव होइ बहु पशु राखई॥ जब धर्म धाम रहै व्यया
धिप खर्च राखै धर्म सो॥ यदि पाप खेट रहै संग ध
न जाइ तासु कु कर्म सो॥४१॥ दोहा॥ शङ्कर नंद आ
चार्य्य पद वंदि सदा सुख दानि॥ शम्भु नाथ यह ग्रं
थमों भाषा ध्याय बखानि॥४२॥ इति श्री मङ्गरी वं
शावतंस कंम विरचित प्रिय राधा रमन लक्ष्मल

श्च वर्गो वर्तित पुवायरड पगः कासड मरिडत परिडत

त्रिवेणी दत्तात्मज शम्भुनाथ कृते दैवज्ञाभरणे द्वि

तीयोध्यायः दोहा

श्री स्यामा शङ्कर चरण कमल हृदय करि ध्यान॥

शंभुनाथ यह जोग फल भाषत मुनि अनुमान॥

१॥ क्षीण चंद्र सुत नवम गत क्रोध्य वंत अति सोइ॥

राशि लग्न पति त्रिक परै सो दुर्बल तन होइ॥ नाथ

श्राष्टम पति धर्म पति कहो रहै युत पाप॥ तासु त्रि

या पर पुरुष संग विहरै मानि मिलाप॥ ३॥ षष्टाष्ट

म पति भौम ससि रहै मातृ ४ गृह मांहि॥ शंभुना

थ शुकदेव मुनि कहि पर जातक ताहि॥ ४॥ भाग्य

षष्ट पति सुख बसैं राहु केतु के संग॥ जननि तासु प

र पुरुष संग विहरै सुंदर अंग॥ ५॥ षष्ट धर्म ९ पति

शनि सहित रहै जननि ४ स्थानु॥ शंभुनाथ शुक

देव कहि शूद्र जाति तेहि जानु॥ ६॥ वाक् पति भा

र्गव सहित सुख गत रिपु नव नाथ॥ तेहि पर जातक

जानिए जननि रमी द्विज साथ॥ ७॥ सुख ४ गत बुध

चंद्रमा रहै वैश्य जात तेहि जानु॥ सूर्य्य भौम तेहि

संग रहै छत्रज तेहि बषानु॥ ८॥ चौपाई॥ शुक्र बृ

हस्पति पाप समेता॥ रहै मदन धन षष्ट निकेता॥

मनुज होइ सो पर त्रिय गामी॥ संपति सहित सुभग

तन कामी॥ रहै गगन १० पति तेहि गृह तैसो॥ तासु

पिता कतु पर त्रिय जैसो॥ तनु पति पाप सहित धन

मांही॥ तासु जनक नृप त्रिय चित चाही॥ काम शत्रु

धन पति धन धामा॥ सखल तासु पति [illegible]

मा॥ यहि विधि भाल इतातत्रिय स्वामी॥ तनु पति सहि
त पीरैं तेहि कामी॥ तनु पति बुधवा मंगल चंदा॥ रहै र
संग शिखि वा तम मंदा॥ अष्टम षष्ट द्वादश भावै॥ श्वे
त कुष्ट तेहि को विद गावै॥ रवि शनि कुज लग्ना ष्टम
जावै॥ तास कुष्ट होवै तन तावे॥ तनु पति रवि युत
त्रिक गृह माही॥ देहि गण्ड माला रुज ताही॥ चंद्र र
हैं जो जल चर रासी॥ सबल त्रिकालय माहि निवासी॥
कुज तहं ग्रंथि शस्त्र व्रन कारी॥ राखै पित्त रोग तनु धा
री॥ बुध गुरु श्याम वात रुग दाता॥ त्रिक गत भृगु क्ष
य रोग विख्याता॥ चंद्र मेष वृष कुज सनि संगा॥ श्वेत कु
ष्ट दायक तेहि अंगा॥ कवि मंगल सशि शनि भृगु गे
हा॥ बसै कर्क वृश्चिक त्रिक देहा॥ मनुज होइ ते सौख्य
विहीना॥ तास कुष्ट तन रहै मलीना॥ दोहा॥ गुरु वा भृ
गु रिपु पति सहित रहै लग्न खल दृष्ट॥ वदन शोथ ते
हि को सदा रहै कुरोग अनिष्ट॥ ९॥ बल युत वृश्चिक वा क
र्क भव रिपु पति तनु गत क्रूर॥ लूता हाति विस्फोट को
तेहि तन होइ जरूर॥ १०॥ द्वादश गृह में गुरु परै गुल्म
रोग तेहि देहि॥ शनि कुज व्यय गृह वा ष्टमे वृणी करै
ध्रुव तेहि॥ ११॥ अजव भूष वृश्चिक वा मकर मंद चंद यु
त पापा॥ रहै नवम गृह ताहि को करै खञ्ज पद ताप॥
१२॥ चंद्र शत्रु पति खल सहित जेहि को रहै पताल॥
शनि गुरु वा तेहि को हृदय रहै सकम्प वेहाल॥ १३॥ कु
ज शनि गुरु याके रहै दुष्ट दृष्ट सुख धाम॥ तासु हृदै को
पै सदा वाडव अग्नि याम॥ १४॥ क्षीण चंद मंगल सहि
त रहै पाप गृह मांहि॥ चंचल चित सो नित भ्रमै वित

मिलै नहि ताहि॥१५॥ चंद रहै जो लग्नसें गुरु हु लखै दृ
ग पूर्ण॥ सो जन हास विलास रत करै शत्रु को चूर्ण॥१६॥
सुभ ग्रह मे मंद ग्रह रहै भौम बुध साथ॥ सूर्य्य विलोक
हि ताहि पदी मनुज होइ बुध नाथ॥१७॥ बुध भार्गव
मति ८ मद ७ दशम मंदिर करै निवास॥ नारि प्रकृति
सो होइ नरनर संग करै विलास॥१८॥ भृगु मंगल म
द ७ दशमसुख ४ जौनि वास कर योग॥ त्रिया सु आवन
र होइ सो नर सों रचै भोग॥१९॥ जिनके बुध भृगु रा
हु संग स प्तम भाव विराज॥ लहै सर्व दारान सुख र
होवै वैश्या बाज॥२०॥ चंद शुक्र ते अग्न ग्रह मंद र
है तनु धाम॥ भृगु शशि देवै ताहि तन होइ सुजाप
सकाम॥२१॥ मंद रहै जो केन्द्र मे देखै रवि कवि चंद्र
सूर्य्य ग्रहण वा जनित यो होइ सुजाषी मंद॥२२॥ रहै
वक्र ग्रह ग्रह महै जेहि के दान वगुन ॥ क्षीण वीर्य्य
सो होइ जन करै त्रिया आनन्द॥२३॥ मंगल जेहि के
षष्ठ ग्रह रहै शुक्र के संग॥ लखै पाप ग्रह ताहि को ते
हि तन वढै अनंग॥२४॥ शुक्र तुला रुष वृष मिथुन जा
के करैं निवास॥ काम आधिक वहु वाम संग सो जन करै
विलास॥२५॥ लखैन भार्गव चंद महि शशि को देखै मं
द॥ देहि नयन रुज मनुज को सपल काम १० मद चंद २६
तनु गत मंगल चंद को निरखै भृगु सुर चंद॥ होइ का
णदृग मनुज सो नयन जोति सो मंद॥२७॥ अग्न भा
ग मंगल रहै रवि ते व्यय धन धाम॥ सौम्य सहित तेहि
नयन महं चिन्ह करै मति रनाम॥२८॥ रहै शुक्र शशि
दृष्ट जो लग्न षष्ठ ग्रह माहि॥ पीडा ते जल वहै दृग चैं

دیو گیا بہرن

थर जानो ताहि ॥२९॥ एक अंश व्यय १२ ग्रह रहे जे
हिके मंगल चंद । दृगमे किंचित चिन्ह तेहि कहि
र नयन सुख मन्द ॥ ३० ॥ धन ग्रह जल चर राशि ग
त शनि युत अस्त भानु ॥ शंभु नाथ तेहि को कहे द
दु मानु तेहि जानु ॥ मन्द सहित जेहिके रहे भास्कर
हा दश केन्द्र ॥ दद्रु मान तेहि को कहे श्री शुक देव
धेन्द्र ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ जेहिके रिपु ६ ग्रह नायक चंद
पाप दृष्ट सुत वल ते मन्द ॥ पिलहि रोग उपजै तन ता
के ॥ शुभ षग जौन लषै चंदा के ॥ सप्तम पति तनु १
नाथ निशेशा ॥ पाप दृष्ट कर पिलह कलेशा ॥ तैसो
परै शनैश्चर याके ॥ तजु मंदाग्नि होइ तन ताके ॥ हे
इ सनैश्चर क्रूर सुदृष्टा ॥ सुष ४ तन १ सप्तम ७ भाव
अनिष्टा ॥ पिलह व्याधि युत सौख्य विहीना ॥ होइ
मनुज शनि जौ वल क्षीना ॥ जाके क्रूर केन्द्र ग्रह मा
ही ॥ विकल शरीर करै तव ताही ॥ रहै केन्द्र रवि निर्व
ल चंदा ॥ लषै तेहि आलस ते मन्दा ॥ दोहा ॥ रहै लग्न
मे शुक्र जो लषै पूर्ण दृग मन्द ॥ कटि तट शीतक वा
त वस कुटिल रहै दुख कन्द ॥ ३३ ॥ भृगु गुरु सुत
चौथे भवन शनि बुध कुज एक ठाव ॥ विकल तासु क
र पद रहे परि पीडित करि हाव ॥ ३४ ॥ छन्द मौक्ति
क दाम ॥ रहे सुख गेह न वा षम नाथ ॥ षल ग्रह ते
युत खेचर साथ ॥ कहे श्रुति ज्योतिष मंगुल ताह २
गणेश अचार्य्यनि वंथन माहि ॥ परै सुख में शनि २
मंगल राहु ॥ तथा रिपु मंदिर वासर नाहु ॥ रहै वल २
हीन शुभ ग्रह संगु ॥ कहै शुक देव मुनी तेहि पंगु ॥

रहे शनि षष्ट फतीव्यय भाव ॥ खल ग्रह वीक्षित क्षीन सुभाव ॥ कहैं तेहि जोतिष पंगुल पाय ॥ रहै दुष वायु रुजा तन छाय ॥ दिवा कर सौम्य शनैश्चर साथ ॥ परै मृत्ति षष्ट करै रुज हाथ ॥ रहै जेहि के शनि भार्गव कर्म ॥ नपुंसक ताहि करै हरि शर्म ॥ रहै रजनी करके हरि राशि ॥ लषै कुज को मदनालय वासि ॥ करै तेहि मानव को तव कारा ॥ कहै ग्रह जोतिष जोग पुराण ॥ परस्पर देखहि चंद्र दिनेश ॥ करै जव बेषमराशि निवेश ॥ तथा निर्षे बुध सूर्य कुमार ॥ नपुंसक ताहि करै हत सार ॥ लषे विष मर्स तातो ग्रह वक्र ॥ रहै सम रासि निवासिय शुक्र ॥ रहैं विषम हीगतो तनु चंद ॥ कुजे क्षित मंढ करै तेहि मंद ॥ रहै भृगु मंगल अस्टम गेह ॥ करै तव वायु रुजा तेहि देह ॥ करै तेहि के तनु अराडक रुद्धि ॥ कहै जेहि के मति शोक समृद्धि ॥ दोहा ॥ भौम रासि गत चंद्रमा रहै सप्तम आगार ॥ अराड रोग तेहि के कही प्रीति बात अधिकार ॥ ३५ ॥ शुक्र चंद्र कुज ग्रह परै गुरु पुनि देषे ताहि शुक्र रुक के दोष ते अराड रोग बढ़ि जाहि ॥ ३६ ॥ मेष वृषभ धनु लग्न जो होइ क्रूर ग्रह दृष्ट ॥ दंत रोग तेहि को कही अष्टम परै अनिष्ट ॥ ३७ ॥ जन्म लग्न वा धनु वृषभ खल खग करै निवास ॥ मस्तक तासु पिराइ निति शिर खल्वाट विभास ॥ ३८ ॥ क्रूर रहै धन नवम सुख औ पांचए आगार ॥ सो नर सुरु कसूर करि निवसै कारागार ॥ ३९ ॥ जन्म लग्न धनु मेष वृष क्रूर रहै आक्रान्त ॥ रसरी बंधन तासु कहि दुखित रहै नितान्त ॥ ३९ ॥ शुक्र रहै शनि रासि मोष षष्ट अष्टम व्यय गेह ॥ होइ मनुज रुज थान सोवइ दुर्गंधित देह ॥ ४० ॥ षष्टाधिप जेहि के मिथुन मकर कन्यका राशि ॥ तेहि के होइ कु गंधित

دیو گیا جھرن

न मुखमे रोग निवास ॥५१॥ याके निज त्रिंशांशमें क्रू
रकुजा औ मंद ॥ तासु वदन दुर्गंधिते पूरो रहै दुख फंद
॥५२॥ मेषलग्न मे चंद्रमा याको पाप समेत ॥ ताकेमु
ख दुर्गंधि बहु कापाते संयुत देत ॥५३॥ रहै चंद्रमा पा
प जुत ससि वा पाप मकार ॥ ससिते सप्तम पाप ग्रह
जननि जाड्य   कार ॥५४॥ है सूर्यजो पाप विच वास
ल खचर समेत ॥ खलते सप्तम रवि रहै जनकाहि मृ
ति दुख देत ॥५५॥ रिपु हू दस ग्रह खलवसै देहि मा
तुको त्रास ॥ दसम चतुर्थै पाप ग्रह पितुको करत
विदेस ॥५६॥ रहै दिवाकर सहज ग्रह जो सहज ह
रि लेहि ॥ शनि कनिष्ठको दुःखकर दो दुःख दुजते
हि ॥५७॥ जाके शशिते वित्त २ व्यय १२ सहन परै ग्रह
कोइ ॥ वेमदुम सो योग है लक्ष्मी नाशक सोइ ॥५८॥
छंद हरिगीतिका ॥ शशिते रहै धनभौनमे ग्रह योगतै
सुनफा कही ॥ धन धान्य सौख्य समृद्धि दायक बुद्धि
कीर्ति करै मही ॥ व्यय भाव माहि रहै ग्रहे जब चंद्रते र
नफा मनो ॥ यहि योगमे जनमै जनो बहु भोग ताहि मिलै
घनो ॥ जब चन्द्रते धन २ बारहे १२ ग्रह माहि खेटको
बसै ॥ दुरुद्ध योग कहि कहै दुर्धरा जनजन्मि संपति
सोलसै ॥ जब कर्म १० पति धन २ कोण ५।९ केंद्र १।
४।७ रहै है बली शुभ संगमो ॥ गज बाजि राजि विरा
जितै जन जीति पावइ जंगमो ॥ धनलाभ गेह रहै नि
शाकर केन्द्र बल जुत मंगलो ॥ जन होइ सो वसुधान
रेन्द्र सु धान्य धनधर मंगलो ॥ व्यय भौनमे हुइ है ग्रहै
यक स्वामि ग्रह व्ययमंदिरो ॥ यह छत्र चामर योग्य राज्य

दुदेत संपति चंदिरो॥जदि मेष रासि रहै मही सुत भा
ग्य गृह मह जाहि को॥धन धान्य वाजि अने का पसुसु
ख वृद्धि दायक ताहि को॥वृषमे रहै जब शुक्र नौमहि
धेनु धन तेहि के वढै॥बुध होइ मैथुन रासि धर्म २
सुधर्म के श्रुति को पढै॥४८॥छंद चामर॥कर्क राशि
महि भाग्य गेह चंद्रमा परै॥शंभु प्रीति कीर्ति तीर्थ वा
स सो सदा करै॥भाग्य भौन सिंह राशि में रहै दिवाक
रो॥अन्न वृत्ति सो करै सदैव क्रोध सो जरै॥राहु भाग्य
भौन कामिनीय रासि मे वसै॥कामिनी के रासि मो वि
लासि सो सदा फसै॥शुक्र जो रहै तुला त्रिकोण भा
ग्य गेह मो॥होइ संपदा सुषी सुधर्म के सनेह मो॥भू
मि सून वृश्चिके रहै यदा सुधर्म्म सो॥निष्ठ सो पर २
राड धर्म प्रीति कै कुकर्म सो॥चाप रासि वासि देव पू
ज्य भाग्य जाहि को राज पूज्य होइ सो वढै सो सिद्धता
हि के॥भौम मकर मे रहै सुभाग्य भाव वास को॥धर्म
हीन होइ सो कुकर्म रीति भास को॥कुंभ माहि सौरि
भाग्य भाव वास जो करै॥कूप वापिका तडाग हात्य २
कीर्ति विस्तरै॥मीन मे वलिष्ठ धर्म ९ धाम मे वृहस्प
ती॥धर्म्म प्रीति रम्य कीर्ति देहि सौम्य सपती॥शंभुना
थ श्री पदा सरोज योग गावही॥शंभु भक्ति मान सो न
रेन्द्र मान पावही॥दोहा॥श्री दैवज्ञा भरणमें वरणो उ
र्द्धगाध्याइ॥शंभुनाथ श्री गुरु दया स्यामा शिव पद
ध्याइ॥५१॥इति श्री मद्गा धारा वनल अलब्धवर्ण
वर्णित प्रकास यशध्याखाराड मरिडत परिडत त्रिवे २
णी प्रसादात्मज शंभुनाथ कृते दैवज्ञा भरणे तृतीयो

योगाध्यायः ३ दोहा॥

रवि सनि मंगल को भद्रा तिथि संजोग॥ अश्लेषा शतभि
ष कृत्तिका सो विष कन्या योग॥१॥ अश्लेषा जो रवि दिन
परै मुख्य द्वैजि तिथि मांहि॥ श्री गणेश आचार्य्य कह
विषा भाषत ताहि॥२॥ परै कृत्तिका शनि दिवस तिथि
स प्तमी समेत॥ नायक तेहि कामिनी ??र निवसै मृ
त्यु निकेत॥३॥ सत भिष औ तिथि द्वादशी संयुत मं
गलवार॥ स्वामी सुख सो कामिनी कबहुँ न लहै अगार
४॥ चौपाई॥ दुइ शुभ षेचर लग्न निवासी॥ एक पा
प ग्रह जो तेहि रासी॥ दुइ खल खेट रहै अरि भावै॥
तेहि कन्ये विधवा श्रुति गावै॥ अश्लेषा द्वैजि परै शनि
वार॥ सत भिष सप्तमि तिथि आगार॥ रवि वासर द्वा
दशी विशाषा॥ विधवा तेहि जोतिर विद भाषा॥ का
मते मंगल शनिश्चर भामा॥ परै नवम पंचम तनु
धामा॥ राडा होइ सत्य सो नारी॥ बाल वयस भाषै
श्रुति धारी॥ चंद्र लग्न ते सप्तम स्वामी॥ होइ वली शु
भ षग संग गामी॥ विधवा जोग तासु मिटि जाई॥
संतति संपति सुष अधिकाई॥ दोहा॥ रहै लग्न प
ति धन २ भवन लग्नै वसौ धनेश॥ बुद्धि मन्त धन
वंत सो होई धर्म नरेश॥५॥ वसै लग्न पति सहज ग
ह सहज नाथ तनु माहि॥ बंधु भ्रात सुख सो लहै
कुल दुइ पूजे ताहि॥६॥ सुख ४ पति जो तनु १ मे
परै तनु पति परै पताल ४॥ राज कार्य्य हित भूमि सु
ख सम्पति मिलै विशाल॥७॥ पंच मेश तनु १ गृह प
रै तनु पति पंचम गेह॥ विद्या सुख मरजाद बहु स

नसुखपावैदेह॥८॥रहैषष्ठपतिलग्नमेषष्ठभवनतनुना
थ॥देहनिरोगितहोइसोबिजैलहैनृपसाथ॥९॥मद
नसदनपतिलग्नमेतनुपतिमदन७अगार॥संतति
सुषताकेकहैबहुत्रियसंगबिहार॥१०॥अष्टमपति
लग्नेरहैतनुपतिअष्टमगेह॥चोरकर्मसोंबौरेनित
तजैराजगृहदेह॥११॥रहैनवमपतिलग्नमेंतनु
पतिधर्म्म९निवासि॥तीर्थादनसोंकरैबहुसुरगुरु
भक्तिबिलासि॥१२॥रहैकर्मपतिलग्नमेंबसैकर्मल
ग्नेश॥तासुसौख्यमहिसंपदादेषिसिहाइनरेस॥१३॥
रहैलाभपतिलग्नमेतनुपतिलाभअगार॥शुभक
र्मादीर्घायुसोभूपतिहोइउदार॥१४॥रहैलग्नपतिद्वा
दसेद्वादसपतितनुमाहि॥बहुरिपुतनअतिकृपणम
ति रंकभाषिरेनाहि॥१५॥यहिविधिव्यत्ययजोगफ
लशंभुनाथद्विजभाषि॥श्रीगणेशशुकदेवमुनि
कोवरसोउश्रुतिसाषि॥१६॥इतिश्रीमहाधाराधन
लब्धलब्धवर्णवर्णितयशश्छात्रमंडितपंडि
तत्रिवेणीदत्तात्मजशंभुनाथकृतेदैवज्ञाभरणेचतु
र्थोध्यायः॥४॥दोहा॥रहैलग्नपतिबहुबलीशुभखेचरे
सहेष॥साठिबर्षसोजीवईमेटैसर्वअदेष॥तनुनेश
शिपूर्णशशि बुधगुरुभार्गवकेंद्र॥रहैलग्नगुरसो
जिनसत्तरिवरिषनरेन्द्र॥२॥रहैचंद्रसुतबहुबलीशुभ
षगकष्टक १।४।७।१०।माहि॥षेटहीनअष्टमभ
वनजीवैत्रिंश ३० समाहि॥३॥लहैनिधनसदनसो
म्यग्रह सौम्यचतुष्टयवासि॥चत्वारिंशत ४० ब
र्षसो नर जीवै सुख भासि॥४॥चंद्र रहै निज भव

नमे तनु मद सौम्यन भोग साठि वर्ष सो जन जिये यह भाषैं बुधलोग ॥५॥ शुभ ग्रह पंचम नवम ग्रह सुरगुरु लग्न कुलीर ॥ असी वर्ष सो जन जिए कहै देवचित धीर ॥६॥ अष्टम पति तनु मे रहै तनु पति अष्टम भाव ॥ क्रूर दृष्टि चौबिस बरिस तासु अयुर्दा गाव ॥७॥ लग्नाष्टम पति मृति भवन क्रूर बिलोकित होइ ॥ बरिस सत्ताइस जीवनो तासु कहै सब कोइ ॥८॥ चौपाई बलयुत गुरु तन १ ससि बलहीना ॥ अष्टम ग्रह मे २ पाप मलीना ॥ आयुर्बल द्वाविंशति साला भाषो ताको बुद्धि बिसाला ॥ सबल ग्रह हीन लग्न औ चन्दा ॥ सनेगुरु त्रिषडाय ११ गामन्दा ॥ षड्बलहीन मृति गृह सुभ केन्द्रा ॥ सत्तरि वर्ष आयु कहि रैन्दा ॥ रहै जीव तन कर्कट रासी ॥ भृगुजा वीर्य्ययुत केन्द्र निवासी ॥ जीवै सो मानव शत वर्षा ॥ सुत संपति युत सदा सहर्षा ॥ कर्क लग्न तनुगत वागीशा ॥ निज गृह केन्द्रगम सौम्य कवीशा ॥ राहु सनैश्चर थिर त्रिषडाया ॥ जीवन तासु वर्ष शत १०० गाया ॥ नवम भवन निवसै जौ मन्दा वीर्य्य वान तनु मंदिर चंदा ॥ रहै चन्द्र बला भव धर्मा ॥ सो जीवै शत वर्ष सुकर्मा ॥ लग्न चंद्र ते अष्टम भावा ॥ होइ खेट को वास अभावा ॥ कवि गुरु केन्द्र रहै बल वंता ॥ कहि पूर्णायु तासु मति मंता ॥ तनु पति गुरु केन्द्रालय राजै ॥ कोण भवन मे पाप समाजै ॥ बरिस एकसै बीस प्रमाना ॥ आयुर्बल तेहि केर बखाना ॥ इन्दु रहै आपोक्लिमगामी ॥ आपोक्लिम ३।६।९।१२ पर ग्रह सम तनु स्वामी ॥ लग्न चंद्र को रहै पापा ॥ जीवै बत्तिस बरिस सतापा ॥ गुरु व्यय कं-

टक १।४।७।१० पाप समाजा॥ तनु पति नव रिपु सह
ज विराजा॥ तीनि वरिस आयु बल ताको॥ रक्षक मृत्यु
ञ्जय जप वाको॥ रहै कर्क मे ससि अंगारा॥ खग वि
हीन मृति केन्द्र अगारा॥ तीनि वरिस जीवै सो प्रानी॥
श्रीगणेश सुक देव वषानी॥ अष्टमनाथ परै तनु माही
शुभ ग्रह परै न अष्टम पाही॥ सो जन जीवै चालिस
साला॥ कहै जोतिषी बुद्धि विशाला॥ दोहा॥ रहै लग्न
पति मृति भवन मृति ८ पति तनु ग्रह मांहि॥ पाचव
रिस सो जन जिवै जौ सुभ लखैन ताहि॥१॥ छंद म
त्त गयन्द॥ मक्र दिवाकर मन्द बसै अरि ६ सोदर मं
दिर मांहि निवासी॥ केन्द्र महै मृति नाथ रहै चउआ
लिस वर्ष तदायु प्रकासी॥ क्रूर विलोकित लग्न
पती शुभ खेट बली ससि सौम्य के अंसा॥ सो तनु मा
नजिय धन वान तिहत्तरि वर्ष मुनीन्द्र प्रशंसा॥ चन्द्र
ते मन्द चरादिक पाप रहै जब व्यंग मराशि विलासी॥
द्वादश अष्टम नायक निर्बल आयु पंचावन वर्ष वि
कासी॥ स्वंदृजे चंद रहै व्यय १२ अष्टम लग्न रहै गु
रु शुक्र समेता॥ एक नक्षत्र कोरे सो वास जिये जन
वर्ष पचास सुचेता॥ दोहा॥ सप्तति तनु से निधन प
ति परै त्रिक १२ ग्रह केन्द्र॥ ताको अट्ठा दस वरिस
आयु कहैं विदु चेन्द्र॥ ३॥ छंद मूल्लना॥ केन्द्र ग्रह
सौम्य ग्रह हीन जो होइ जनि कोइ ग्रह भाव अठए
निवासी॥ जिंया ३० मित साल सो बाल जीवै भव
न मृत्यु ८ पति होइ जो केन्द्र राशी॥ क्षीण शशि पा
पयुत होइ अष्टम भवन लग्न पति होइ बलसे वि

हीना॥बालसो चालिसे साल जीवै अगनित हानि यह भा
षि जोतिस प्रवीना॥मन्द जो होइ सुत ५ धर्म ९ धन २
आठए लाभ ११ गृह मांहि प्रानि हर्ष संगा॥वैरि अष्ठ
म भवन वारहे छीण बल विंश मित वर्ष सो धारि
अंगा॥अष्टमे द्वादशे दूसरे पाप ग्रह होइ ससि राहु
जो संग त्यागी॥विंश मित सालसो वाल जीवै सही भा
षि शुकदेव मुनिवर विरागी॥४॥दोहा॥जीव शुक्र त
नु में रहैं वा पंचम ग्रह मांहि॥बहु आयुर्बल तासु कहु
सम्पति सेवै ताहि॥५॥देषि ग्रहन को बला बल तेहि
सभ भांति विचारि॥सत्य होइ तेहि को वचन जो भाषै
श्रुति धारि॥६॥बुधि वर लक्ष्मी दत्त को धरि शुभ आ
ज्ञा माथ॥श्री दैवज्ञाभरण यह ग्रंथ रचे शिव नाथ॥
७॥छंद त्रिभंगी॥दुर्गा प्रसादः प्रिय श्रुति वादः हरि गु
ण स्वादः धरणितले॥मुनि गर्ग सुवंशे जन्मि प्रशंसे
द्विज कुल हंसे गुण विमले॥कापिया भिध नाम सु
पति धाम निकट नृकाम हित दाता॥शुज शो विख्या
ता ग्रंथ विधाता धर्म निधाता जग त्राता॥तेहि वर
कुमारो पच्चउ दारो श्रुति गुण धारो धर्म गमः॥ठाकु
र प्रमादो जित अरि वादो प्रिय हरि नादो योग रमः॥धृ
त परमाचारो भृत परिवारो कृष्ण पियारो जेहि मन २
मे॥क्षिति विदित अमोदा पति भित सोदात प्रबल पोद
वितु धन में॥कृष्ण दत्त तेहि ते कनिष्ठ हरि निष्ठ उदारो
धरणि सुमणि माणि भिष्या सुजुग चरण पषारो॥
वाकी सिद्धि जस चन्द उदित जे दियो जग माही॥वर्त
मान दिन रैन चैन कर ताकर छाही॥बुध वर कहहैं

राम भये तेहिके लघु भ्राता॥राधाकृष्ण पदाब्ज भक्ति चिन्तामणि ध्याता॥नरपति चन्द सुबन्ध चरणको विद्‌जन त्राता॥वासुदेव बुध जनक जगति कीरति विख्याता॥छंद चामर संगील॥ताहि ते कनिष्ट श्री गोपाल दत्त पण्डित॥कृष्ण प्रीति धर्म नीति वेद रीति मण्डितो॥जन्त्र कीर्ति मन्त्र संत चर्णतो सभाजितो॥लब्ध वर्ण लब्ध जवर्ण धी सुवर्ण राजितो॥छंद॥

श्री वेणी प्रसाद तासु लघु सोदर जाए॥श्री राधा पद सेइ सिद्धि विधि वांछित पाए॥शंभुनाथ सुत तासु ग्रंथ विरचे अभिरामा॥हृदय ध्याइ अति मुद दनित्त शिव सं युत स्यामा॥इति श्री मद्राधारा धनलब्ध लब्धवर्ण वर्णित प्रकाण्ड यशश्काण्ड मण्डित पण्डित त्रिवेणी प्रसादात्मज शंभुनाथ कृते देवत्रा भरणे पंचमाऽध्यायः ५॥ लिखी चाडी दत्त ब्राह्मण कान कुब्ज॥ ॥ ॥ संवत १९३१ ॥ ॥ ॥

